[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

IC

Sr. No. of Question Paper : 8784

Unique Paper Code : 12057608

Name of the Paper : हिंदी की भाषिक विविधताएँ

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS – DSE**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. वाचिक हिंदी के क्षेत्रीय रूपों का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

साहित्यिक भाषा के रूप में हिंदी की विविधता पर प्रकाश डालिए।

2. निर्धारित पदों के आधार पर कबीर की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। (15)

अथवा

अमीर खुसरो की मुकरियों का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. बनारसीदास रचित अर्धकथानक' आत्मकथा की कसौटी पर खरी उतरती है - स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

गालिब की शायरी तत्कालीन समाज का जीवंत दस्तावेज है - विवेचन कीजिए।

4. 'रानी केतकी की कहानी' के कथानक की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

फणीश्वरनाथ रेणु की 'पंचलैट' कहानी की शिल्पगत विशेषताएँ बताइए।

5. निम्नलिखित उद्धरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (8)

(क) मेरे दिल कूँ किया बेखुद तेरी अंखियों ने आखरि कूँ,
कि ज्यूँ बेहोश करती है शराब आहिस्ता-आहिस्ता
हुआ तुझ इश्क सूँ ए आतिशीं रू दिल मिरा पानी,
कि ज्यूँ गलता है आतिश सूँ गुलाब आहिस्ता-आहिस्ता

अथवा

वक्त बेवक्त मोहे वाकी आस,
रात दिन वह रहत मेरे पास,
मेरे मन को करत सब काम,
ए सखी साजन ना सखि राम

(ख) जोरहिं अजितनाथ के छंद। लिखहिं नाममाला भरि बंद ।।
च्यारौं काज करहिं मन लाइ। अपनी अपनी बिरिया पाइ ।।
इहि बिधि च्यारि महीनें गए। च्यारि काज संपूरन भए ।।
करी नाममाला सै दोइ। राखे अजित छंद उरपोइ ।। (7)

अथवा

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलनेवालों में से एक कोई बड़े पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े घाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक

भौं चढ़ाकर, आँखे फिराकर लगे कहने- यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छों से अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का।